पारि-पुनर्स्थापन वन अनुसंधान केन्द्र, प्रयागराज

(भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद, देहरादून)

हिंदी पखवाड़ा का समापन

पारि-पुनर्स्थापन वन अनुसंधान केन्द्र, प्रयागराज द्वारा हिंदी पखवाड़ा (14.09.2022 से 28.09.2022) का समापन दिनांक 28.09.2022 को राजभाषा प्रशस्ति कवि सम्मेलन के साथ हुआ। केंद्र प्रमुख डॉ० संजय सिंह ने समारोह में आए प्रख्यात कवियों तथा अतिथियों का स्वागत किया।

राजभाषा प्रशस्ति कवि सम्मेलन में प्रख्यात कवियों द्वारा प्रतिनिधि पंक्तियों का प्रस्तुतीकरण किया गया। उपस्थित कवियों ने स्वरचित पंक्तियों के माध्यम से श्रोताओं को सामाजिक कृत्यों के प्रति संदेश दिया तथा राजभाषा हिन्दी को बढ़ावा देने हेतु आह्वान भी किया। युवा कवि धीरेन्द्र धवल ने अपनी पंक्तियों "शब्द मरते नहीं, रहते हैं मौजूद, वह लौटते हैं उसी तरह, उतनी ही ऊंची आवाज में" के साथ अन्य रचनाओं से सभा को सम्बोधित किया। प्रख्यात कवियित्री रूपम मिश्र ने ''कायदे से मुझे एक जीवन, अलग से मिलना चाहिए था'' तथा अन्य रचनाओं से प्रस्तुति दिया।

डॉ० बसंत त्रिपाठी, प्रोफेसर हिंदी विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय ने ''जीवन कभी ख़त्म नहीं होता......, दुनिया सचमुच वहीं से शुरू हो सकती है, जहाँ से लगता है, कि ख़त्म हो चुकी है'' और प्रसिद्ध रचना 'पिता' की कुछ पंक्तियों को प्रस्तुत किया। प्रख्यात कवि श्री यश मालवीय ने अपने गीत ''समय की मार सह लेना, नहीं झुकना मेरे साथी'' से श्रोताओं को मन्त्र मुग्ध कर दिया, साथ ही कुछ अन्य नयी रचनाएँ भी प्रस्तुत की।

प्रसिद्ध रंगमंच कलाकार श्री प्रवीण शेखर जी ने भी शब्द कला के माध्यम से सुंदर प्रस्तुति दिया। केंद्र प्रमुख डॉ० संजय सिंह ने ''विरह में झुलसती धरा को पता क्या, सफर मेघ का बस गगन जानता था'' के साथ कुछ गजलें प्रस्तुत की। हिन्दी अधिकारी डॉ0 अनुभा श्रीवास्तव द्वारा भी काव्य पाठ किया गया।

राजभाषा प्रशस्ति कवि सम्मेलन
हिन्दी पखवाड़ा समापन समारोह
28 सितम्बर 2022 समय : 2:30 बजे से
पारि-पुनर्स्थापन वन अनुसंधान केन्द्र, प्रयागराज
FRCER

राजभाषा प्रशस्ति कवि सम्मेलन
हिन्दी पखवाड़ा समापन समारोह
पारि-पुनर्स्थापन वन अनुसंधान केन्द्र, प्रयागराज
FRCER

राजभाषा प्रशस्ति कवि सम्मेलन
हिन्दी पखवाड़ा समापन समारोह
28 सितम्बर 2022 समय : 2:30 बजे से
पारि-पुनर्स्थापन वन अनुसंधान केन्द्र, प्रयागराज
FRCER

हिन्दी पखवाड़ा के मध्य राजभाषा हिन्दी को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न प्रतियोगिताएँ यथा -भाषण, त्वरित लेखन, श्रुतलेखन तथा काव्य पाठ आदि के लिए विजेताओं को क्रमशः प्रथम, द्वितीय, तृतीय तथा सांत्वना पुरस्कार वितरित किया गया।

राजभाषा प्रशस्ति कवि सम्मेलन
हिन्दी पखवाड़ा समापन समारोह
28 सितम्बर 2022 समय : 2:30 बजे से

राजभाषा प्रशस्ति कवि सम्मेलन
हिन्दी पखवाड़ा समापन समारोह
28 सितम्बर 2022 समय : 2:30 बजे से

राजभाषा प्रशस्ति कवि सम्मेलन
हिन्दी पखवाड़ा समापन समारोह
28 सितम्बर 2022 समय : 2:30 बजे से

इसी क्रम में दिनांक 26.09.2022 को जलवायु परिवर्तन नियंत्रण में वानिकी की भूमिका (Role of Forestry in Climate Change Mitigation) विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय वैज्ञानिक संगोष्ठी का भी आयोजन किया गया। वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ० अनुभा श्रीवास्तव, हिन्दी अधिकारी के नेतृत्व में हिन्दी पखवाड़ा सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। कार्यक्रम में डा0 अनिता तोमर, वरिष्ठ वैज्ञानिक, डा0 कुमुद दूबे, वरिष्ठ वैज्ञानिक, श्री आलोक यादव, वरिष्ठ वैज्ञानिक, डा0 एस0 डी0 शुक्ला, वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी , रतन कुमार गुप्ता , तकनीकी अधिकारी तथा कार्यालय के समस्त कर्मचारियों के साथ विभिन्न परियोजनाओं में कार्यरत शोधार्थीगण आदि ने भाग लिया।

मीडिया कवरेज

आयोजन | हिन्दी पखवाड़ा के तहत पारि- पुनर्स्थापन वन अनुसंधान केंद्र में हुआ कवि सम्मेलन, कवियों ने अपनी रचनाओं से बांधा समां

'समय की मार सह लेना, नहीं झुकना मेरे साथी'

प्रयागराज, वरिष्ठ संवाददाता। हिन्दी पखवाड़ा के तहत बुधवार को पारि-पुनर्स्थापन वन अनुसंधान केंद्र में कवि सम्मलेन का आयोजन हुआ। इस दौरान प्रसिद्ध कवियों ने अपनी रचनाएं प्रस्तुत कर श्रोताओं को मुग्ध कर दिया। इस दौरान नवगीतकार कवि यश मालवीय ने 'समय की मार सह लेना, नहीं झुकना मेरे साथी' सुनाकर सभी को वाह-वाह करने पर मजबूर कर दिया।

युवा कवि धीरेंद्र धवल ने 'शब्द मरते नहीं, रहते हैं मौजूद, वह लौटते हैं, उसी तरह, उतनी ही ऊंची आवाज में' सुनाई। कवयित्री रूपम मिश्र ने 'कायदे से मुझे एक जीवन, अलग से मिलना चाहिए था, तुम्हे प्रेम करने के लिए' सुनाकर समा बांध दिया। इलाहाबाद विश्वविद्यालय हिन्दी विभाग के डॉ. बसंत त्रिपाठी ने 'जीवन कभी खत्म नहीं होता...... दुनिया सचमुच वहीं से शुरू हो सकती है, जहां से लगता है कि खत्म हो चुकी है' सुनाकर जीवन की सच्चाई पर प्रकाश डाला। इसके साथ ही उन्होंने पिता की कुछ पंक्तियां भी प्रस्तुत कीं। अंत में शिशिर सोमवंशी के नाम से प्रसिद्ध कवि डॉ. संजय सिंह ने 'विरह में झुलसती धरा को पता क्या, सफर मेघ का बस गगन जानता था' जैसी गजल सुनाकर सभी की तारीफ बटोरी। हिन्दी पखवाड़ा के मध्य राजभाषा हिन्दी को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन हुआ। जिसमें भाषण, त्वरित लेखन, श्रुतलेखन व काव्य पाठ आदि का आयोजन किया गया। इसमें प्रतिभागियों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। विभिन्न प्रतियोगिताओं के लिए विजेताओं को प्रथम, द्वितीय, तृतीय व सांत्वना पुरस्कार दिए गए। वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अनुभा श्रीवास्तव के नेतृत्व में कार्यक्रम हुआ। वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी डॉ. एसडी शुक्ला, तकनीकी अधिकारी रतन गुप्ता व सभी कर्मचारियों और शोधार्थियों ने इस दौरान योगदान दिया।

पारि-पुनर्स्थापन वन अनुसंधान केंद्र में आयोजित कवि सम्मेलन में सम्मानित हुए कवि।

हिन्दी पखवाड़ा का समापन कवि सम्मलेन के साथ

प्रयागराज। पारि - पुर्नस्थापन वन अनुसन्धान केन्द्र में राजभाषा प्रशस्ति कवि सम्मलेन के साथ समापन हुआ। विगत वर्षों की भांति इस वर्ष भी हिन्दी पखवाड़ा का समापन कुछ अनूठे अंदाज में आयोजित किया गया। डॉ 0 संजय सिंह ने कार्यक्रम का संचालन करते हुए समारोह में आए प्रख्यात कवियों का स्वागत किया। राजभाषा प्रशस्ति कवि सम्मेलन में प्रख्यात कवियों द्वारा प्रतिनिधि पंक्तियों का प्रस्तुतीकरण किया गया। प्रख्यात कवियों ने स्वरचित पंक्तियों के माध्यम से श्रोताओं को समाजिक कृत्यों के प्रति संदेश दिया तथा राजभाषा हिन्दी को बढ़ावा देने हेतु आह्वान भी किया। युवा कवि धीरेन्द्र धवल ने अपनी पंक्तियों ' शब्द मरते नहीं, रहते है मौजूद, वह लौटते है उसी तरह, उतनी ही ऊंची आवाज में' के साथ अन्य रचनाओं से सभा को सम्बोधित किया। प्रख्यात कवियित्री रूपम मिश्र ने 'कायदे से मुझे एक जीवन, अलग से मिलना चाहिए था, तुम्हे प्रेम करने के लिए' तथा अन्य रचनाओं से समा बांध दिया। डॉ0 बसंत त्रिपाठी, हिंदी विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय ने 'जीवन कभी ख़त्म नहीं होता...... दुनिया सचमुच वहीं से शुरू हो सकती है, जहाँ से लगता है, कि ख़त्म हो चुकी है' और प्रसिद्ध रचना 'पिता' की कुछ पंक्तियों को प्रस्तुत किया।प्रख्यात कवि यश मालवीय ने अपने गीत 'समय की मार सह लेना, नहीं झुकना मेरे साथी' से श्रोताओं को मन्त्रमुग्ध करने के साथ अन्य नयी रचनाएँ प्रस्तुत की। अंत में शिशिर सोमवंशी के नाम से प्रसिद्ध कवि डॉ0 संजय सिंह ने 'विरह में झुलसती धरा को पता क्या, सफर मेघ का बस गगन जानता था' के साथ कुछ गजलें प्रस्तुत की। हिन्दी पखवाड़ा के मध्य राजभाषा हिन्दी को बढ़ावा देने के लिए विभिनन्‍ प्रतियोगिताओं यथा भाषण, त्वरित लेखन, श्रुतलेखन तथा काव्य पाठ आदि का आयोजन किया गया, जिसमें प्रतिभागियों ने बढ़ - चढ़कर हिस्सा लिया। विभिनन्‍प्रतियोगिताओं के लिए विजेताओं को क्रमशः प्रथम, द्वितीय, तृतीय तथा सांत्वना पुरस्कार वितरित किया गया। वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ0 अनुभा श्रीवास्तव, हिन्दी अधिकारी के नेतृत्व में हिन्दी पखवाड़ा सफलता पूर्वक संपनन्‍ हुआ। कार्यक्रम में वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी डॉ0 एस0डी0 शुक्ला, तकनीकी अधिकारी, रतन गुप्ता तथा कार्यालय के समस्त कर्मचारियों के साथ विभिनन्‍ परियोजनाओं में कार्यरत शोधार्थीगण आदि मौजूद रहे।

कवि सम्मेलन के साथ पखवाड़े का समापन

प्रयागराज (नि.सं.)। पारि पुर्नस्थापन वन अनुसन्धान केन्द्र में राजभाषा प्रशस्ति कवि सम्मेलन के साथ समापन हुआ। डॉ. संजय सिंह ने कार्यक्रम का संचालन करते हुए समारोह में आए प्रख्यात कवियों का स्वागत किया। राजभाषा प्रशस्ति कवि सम्मेलन में प्रख्यात कवियों द्वारा प्रतिनिधि पंक्तियों का प्रस्तुतीकरण किया गया। प्रख्यात कवियों ने स्वरचित पंक्तियों के माध्यम से श्रोताओं को समाजिक कृत्यों के प्रति संदेश दिया तथा राजभाषा हिन्दी को बढ़ावा देने हेतु आह्वान भी किया। युवा कवि धीरेन्द्र धवल ने अपनी पंक्तियों शब्द मरते नहीं, रहते हैं मौजूद, वह लौटते हैं उसी तरह, उतनी ही ऊंची आवाज में के साथ अन्य रचनाओं से सभा को सम्बोधित किया। कवियित्री रूपम मिश्र ने कायदे से मुझे एक जीवन, अलग से मिलना चाहिए था, तुम्हे प्रेम करने के लिए तथा अन्य रचनाओं से समा बांध दिया।